भाग्यशाली बिल्ली

परंपरागत जापानी कहानी

सुक्की सेकी

भाग्यशाली बिल्ली

परंपरागत जापानी कहानी

सुक्की सेकी

बहुत समय पहले जापान में तोकुज़ो नाम का एक खिलौना बनाने वाला रहता था. वो एक दयालु युवक था जो त्यौहारों पर अपने खिलौने बेचने के लिए गाँव-गाँव घूमता था.

बच्चों को उसके खिलौने पसंद आते थे. फिर भी, तोकुजो जीवित रहने के लिए बमुश्किल पर्याप्त पैसा कमा पता था. "किसी दिन," उसने सोचा, "मैं एक इतना अनूठा खिलौना बनाऊंगा कि हर कोई उससे खेलना चाहेगा."

अगला त्यौहार बड़ा था, और तोकुज़ो को पता था कि वहाँ वो बहुत सारे खिलौने बेच पाएगा. उसके लिए उसे सबसे अच्छी जगह पाने की जल्दी थी. उसने अपनी यात्रा शुरू की, लेकिन उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि जल्द ही उसका जीवन बदलने वाला था.

वो अभी एक छोटे से गाँव में प्रवेश ही कर रहा था, तभी अचानक एक भयभीत बिल्ली उसके सामने से गुज़री. एक गुर्राता कुत्ता उसका पीछा कर रहा था.

"अरे नहीं! रुक जाओ!" तोकुज़ो चिल्लाया. तभी उसने एक एक्सप्रेस-डिलीवरी घोड़े को उस दिशा में तेजी से आते हुए देखा. घोड़े के बिल्ली से टकराने पर तोकुज़ो बेबस वहीं खड़ा रह गया.

हादसा इतनी तेजी से हुआ कि शहरवासियों को बिल्ली की भनक तक नहीं लगी. लेकिन तोकुज़ो ने देखा कि उस बिल्ली को बहुत चोट लगी थी.

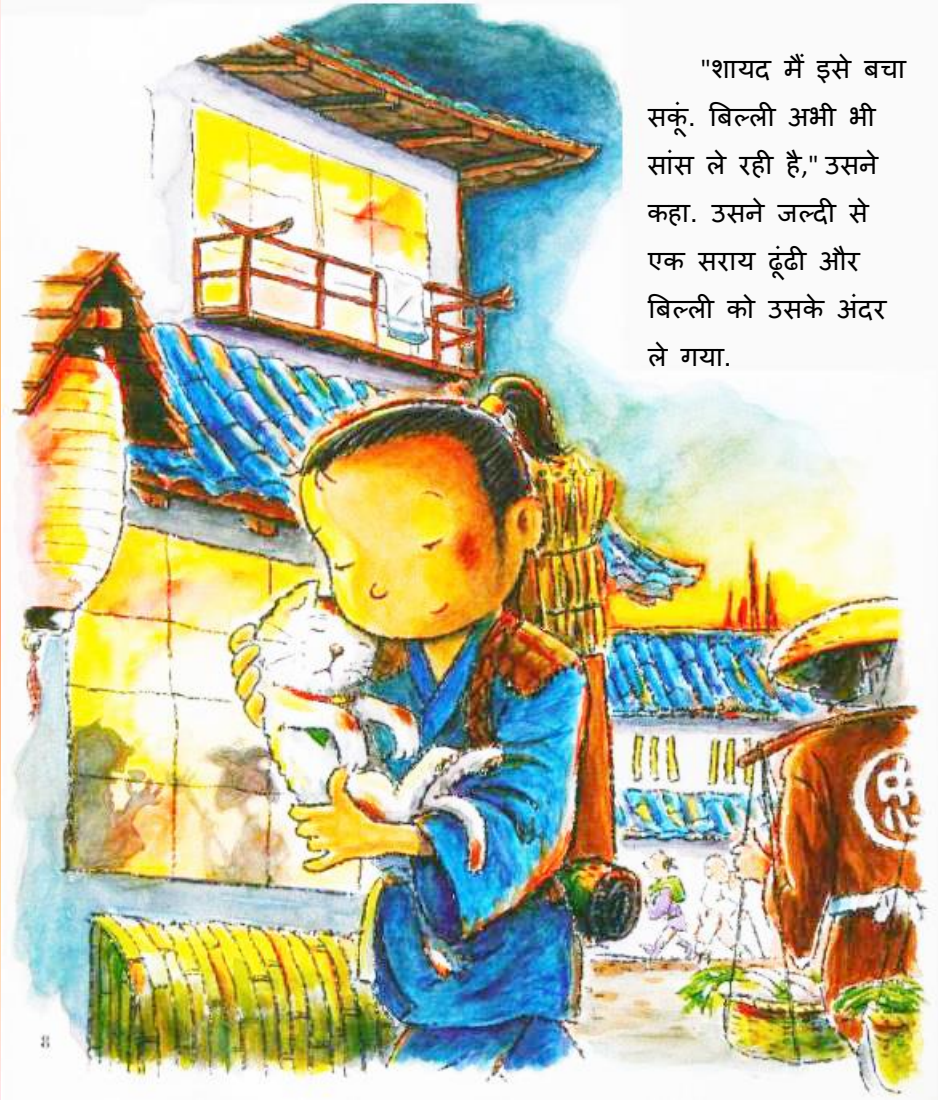

"शायद मैं इसे बचा सकूं. बिल्ली अभी भी सांस ले रही है," उसने कहा. उसने जल्दी से एक सराय ढूंढी और बिल्ली को उसके अंदर ले गया.

उस रात तोकुज़ो देर तक जागा रहा. उसने बिल्ली के टूटे पैर को लपेटा और सुनिश्चित किया कि उसका बिस्तर गर्म और साफ हो. "मैं तुम्हारा नाम 'तमा' रखूँगा ठीक उसी गोल घंटी के नाम पर जो तुमने पहनी है," तोकुज़ो ने कहा.

अगली सुबह 'तमा' ने अपनी आँखें खोलीं और मुस्कुराने लगीं.

"अच्छा, 'तमा', तुम्हें देख मुझे बहुत राहत मिली है. आज बड़ा त्योहार है, लेकिन मैं आज तुम्हारे साथ इस छोटे से शहर में ही रहूंगा. मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूं कि तुम जल्दी से ठीक हो जाओ."

अगले दिन तोकुज़ो गाँव के बच्चों को कुछ खिलौने बेचने में सफल हुआ. उसने उससे जो थोड़ा सा पैसा कमाया, उससे उसने दो मछलियाँ खरीदीं: एक अपने लिए और एक 'तमा' के लिए. "आज रात, हम जश्न मनाएंगे!" उसने सोचा.

वो सराय में लौटा और दरवाजा खोला. " 'तमा'..." उसने पुकारा. हालाँकि, जब उसने मोमबत्ती जलाई, तब उसे पता चला कि 'तमा' मर चुकी थी.

अगली सुबह, तोकुज़ो ने 'तमा' को एक कब्र में दफना दिया, फिर उसने दूसरे गांव की ओर मुख किया. अलविदा कहते हुए उसका दिल दुख से भारी था.

बड़ा उत्सव लगभग समाप्त हो गया था, लेकिन तोकुज़ो के पास अब भी समय था. अत: वो अपनी यात्रा पर चलता रहा. अचानक आसमान में अंधेरा छा गया. तेज़ गड़गड़ाहट ने चेतावनी दी कि एक बड़ा तूफान तेजी से आ रहा था.

वह तेजी से छिपने के लिए पास के पेड़ की ओर भागा. बारिश और तेज़ होने लगी.

जैसे ही तोकुज़ो ने अपना चेहरा पोंछा, उसने देखा कि मंदिर के गेट के पास एक बिल्ली म्याऊं-म्याऊं कर रही थी. ऐसा लग रहा था जैसे वो उसे अंदर आने के लिए आमंत्रित कर रही हो! हैरानी की बात यह थी कि वो बिल्ली 'तमा' की तरह ही लग रही थी, जो अभी एक दिन पहले ही मरी थी.

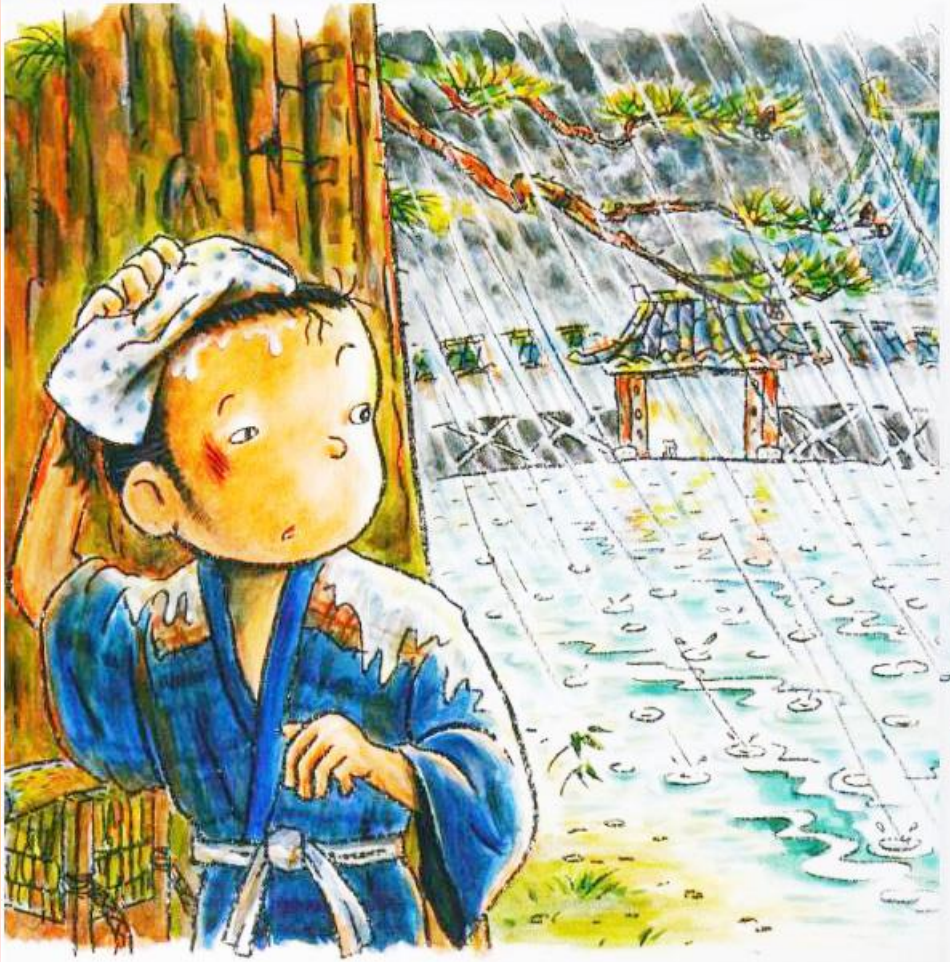

तोकुज़ो बारिश के बारे में भूल गया. वो बिल्ली की ओर दौड़ा. "'तमा' 'तमा'.. क्या वो तुम हो? तुम यहाँ क्या कर रही हो? मुझे लगा कि तुम मर गई हो!" उसने बिल्ली को लगभग छू ही लिया था कि अचानक...

धड़ाम! प्रकाश और ध्वनि का एक बड़ा विस्फोट हुआ. वो घूमा और हांफने लगा. चीड़ का पेड़ जिसने बारिश से उसकी रक्षा की थी बिजली के एक शक्तिशाली झटके से आधे में विभाजित हो गया!

तोकुज़ो ने सभी को बताया कि कैसे एक रहस्यमयी बिल्ली ने उसे बचाया था. लोग इस कहानी को सुनकर अचंभित हुए. उन्हें उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ. "बिल्लियां कैसे जान सकती हैं कि बिजली गिरने वाली है? और अगर कोई बिल्ली मर गई है, तो फिर वो तुम्हें कैसे बुला सकती हैं?"

तोकुज़ो को नहीं पता था कि वो उसका क्या जवाब दे. "मुझे यकीन है कि बिल्ली ने मेरी जान बचाई है, लेकिन मेरे पास यह बात साबित करने के लिए कोई प्रमाण नहीं है."

ओशो-सान मंदिर में उन बातों को ध्यान से सुन रहे थे. "शायद, इसमें कुछ सच्चाई हो जिसे हम समझा नहीं सकते. तोकुज़ो, कृपया हमारे साथ मंदिर में रात बिताओ ताकि हम इसके बारे में कुछ और बात कर सकें."

तोकुज़ो सोचने के लिए ध्यान-वाटिका में गया. "मुझे एक बिल्ली ने बचाया, पर लोगों ने इस बात पर विश्वास नहीं किया. मुझे आगे क्या करना चाहिए? मुझे उस बिल्ली की एक मूर्ति बनानी चाहिए," उसने सोचा, "ताकि हर कोई इंसान मेरा संदेश साझा कर सके."

तोकुज़ो ने ओशो-सान से सलाह मांगी. "मैं तुम्हें बूढ़े मास्टर क्राफ्ट्समैन से मिलवाता हूं. उनकी बेटी उनकी देखभाल करती है क्योंकि उनकी तबियत ठीक नहीं है. लेकिन वो समझदार हैं, और वो तुम्हें बताएँगे कि तुम्हें आगे क्या करना चाहिए."

पुराने उस्ताद शिल्पकार की तबीयत ठीक नहीं थी, लेकिन वो तोकुज़ो को कुछ सलाह देकर खुश थे. "मिट्टी तुम्हारी मूर्तियों के लिए सबसे अच्छी सामग्री होगी, और मेरी कार्यशाला में वो सब कुछ सामान मौजूद है जिसकी तुम्हें आवश्यकता होगी. तुम्हारा वहां स्वागत है. दुर्भाग्य से, तुम्हें वो काम खुद ही करना होगा, क्योंकि मैं अपनी बीमारी के कारण तुम्हारी मदद नहीं कर पाऊंगा."

तोकुज़ो ने वर्कशॉप का दरवाजा खोला. वो कहाँ से शुरू करे? औज़ार और सामान हर जगह फैले थे! वो खुद को खोया हुआ महसूस कर रहा था लेकिन साथ ही साथ वो बहुत उत्साहित भी था.

उसने बूढ़े उस्ताद के निर्देशों का पालन करना शुरू किया. सबसे पहले उसने मिट्टी गूँथी.

फिर, उसने उसे बिल्ली के आकार में बनाया. "वो बिल्ली की तरह बिल्कुल नहीं दिख रही हैं!" उसने खुद से कहा.

इसके बाद, मिट्टी को पकाना था ताकि मिट्टी सख्त हो जाए. लेकिन आग लगाने से पहले उसे लकड़ी काटनी पड़ेगी. यह उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक काम था.

अंत में, मिट्टी पक कर तैयार गई! तोकुज़ो, भट्टी के दरवाज़े तक पहुँचा और उसने अपने काम को देखा. उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ. "ज़रा, मेरी बिल्लियों को देखो! मैंने क्या कुछ गलत किया?" इतनी सावधानी से बनाई गई उसकी मूर्तियाँ टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गई थीं.

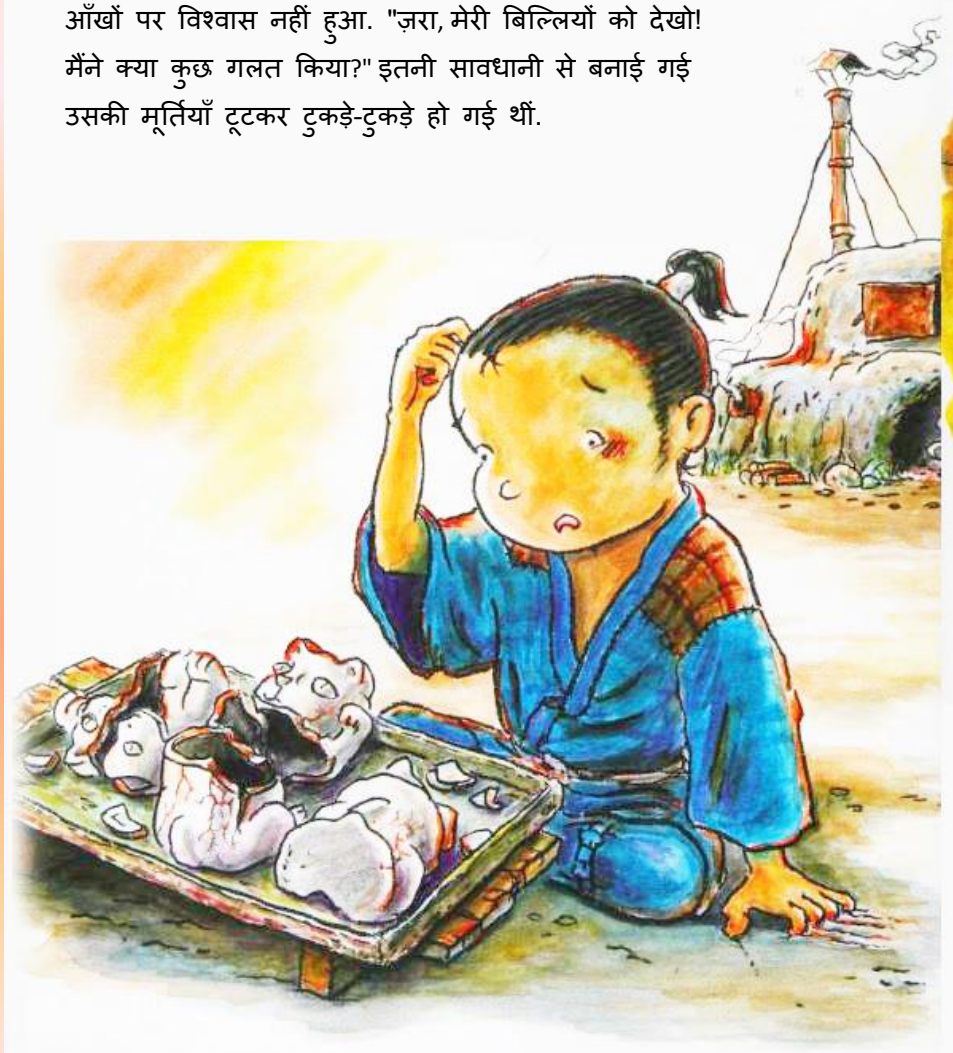

तोकुज़ो अपने काम को बूढ़े उस्ताद के पास लेकर आया. "उनसे तुम अच्छी दिखने वाली बिल्लियाँ बना सकते थे. लेकिन तुमने मिट्टी को अच्छी तरह से गूंथा नहीं, और देखो तुम्हारी आग बहुत गर्म थी," उस्ताद ने कहा.

तोकुज़ो ने हार नहीं मानी. उसे और जलाऊ लकड़ी की आवश्यकता थी, इसलिए वो वापस उस पेड़ के पास गया जिस पर बिजली गिरी थी. उसने फिर से शुरुआत की, और दिन-रात काम किया.

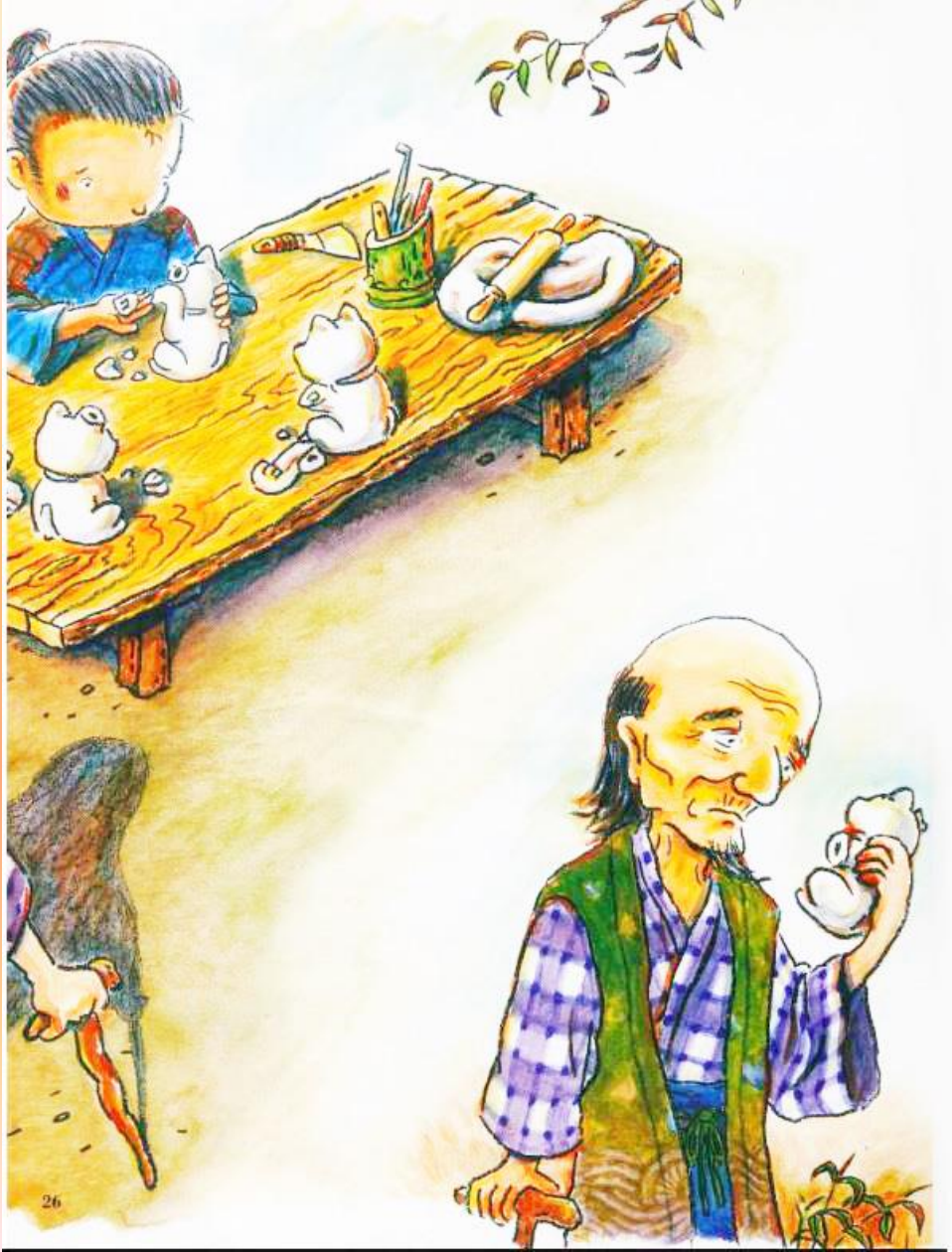

एक अच्छी सुबह, बूढ़े उस्ताद को कुछ बेचैनी महसूस हो रही थी, और वे देखने के लिए बाहर आए. वो तोकुज़ो के दृढ़ संकल्प से बड़े प्रभावित हुए. "अब तुम्हारी बिल्लियाँ कहीं बेहतर दिख रही हैं. अब तुम बिल्ली के शरीर के अंदर एक वजन छिपाकर हाथ को ऊपर-नीचे क्यों नहीं झुलाते?" उन्होंने सुझाव दिया. "आँखें जो कुछ देखती हैं, उसके पीछे अक्सर बड़े चतुर विचार छिपे होते हैं."

तोकुज़ो चकित होकर उछल पड़ा. "हाँ! उससे बिल्ली और अधिक ज़िंदा लगने लगेगी. बहुत-बहुत धन्यवाद उस्ताद!" अब बूढ़े उस्ताद भी उत्तेजित होने लगे.

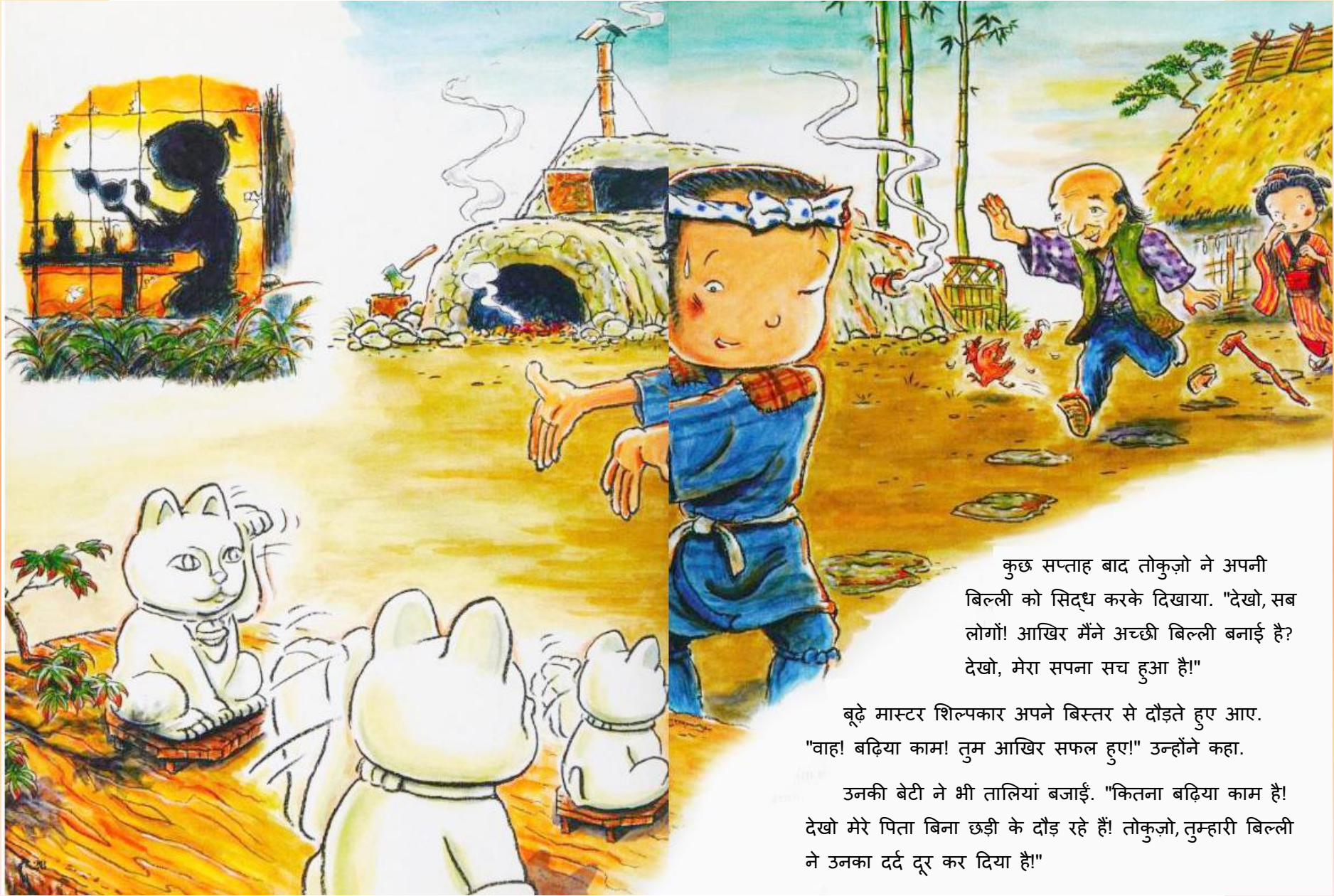

कुछ सप्ताह बाद तोकुज़ो ने अपनी बिल्ली को सिद्ध करके दिखाया. "देखो, सब लोगों! आखिर मैंने अच्छी बिल्ली बनाई है? देखो, मेरा सपना सच हुआ है!"

बूढ़े मास्टर शिल्पकार अपने बिस्तर से दौड़ते हुए आए. "वाह! बढ़िया काम! तुम आखिर सफल हुए!" उन्होंने कहा.

उनकी बेटी ने भी तालियां बजाईं. "कितना बढ़िया काम है! देखो मेरे पिता बिना छड़ी के दौड़ रहे हैं! तोकुज़ो, तुम्हारी बिल्ली ने उनका दर्द दूर कर दिया है!"

बूढ़े मास्टर शिल्पकार की बेटी एक प्रतिभाशाली पेंटर थी. इसलिए, उसने मूर्तियों को रंगने में मदद की. "इस बिल्ली का अपना एक नया जीवन है!" अब तोकुज़ो बेहद रोमांचित था. उसने बिल्ली का नाम "मानेकी-नेको" रखा. जिसका अर्थ था "वो बिल्ली जो भाग्यशाली साबित हो."

जल्द ही "मानेकी-नेको" की मूर्तियाँ पूरे जापान में फैल गईं, और हर कोई एक वैसे ही मूर्ती खरीदना चाहता था. जैसे-जैसे समय बीतता गया, लोग कहने लगे कि एक उठा हुआ दायां पंजा अच्छा भाग्य लाता है, और एक उठा हुआ बायाँ पंजा सुख और सौभाग्य लाता है.

"ओशो-सान, क्या 'तमा' बिल्ली सचमुच मर गई थी?" बूढ़े मास्टर ने पूछा.

"ठीक है, शरीर मर सकता है लेकिन आत्मा हमेशा जीवित रहती है. इसलिए, 'तमा' हमेशा हमारे दिल में रह सकती है."

"मानेकी-नेको" की यह कहानी हमें याद दिलाती है कि हम आज जो काम करते हैं वही कल का कारण बनता है. यहां तक कि एक छोटी बिल्ली भी हमारे काम को याद रख सकती है. और वो हमारी जान भी बचा सकती है. और वो हमेशा-हमेशा के लिए एक दोस्त भी बन सकती है.

समाप्त